# धान से संबंधित

**प्रश्न: क्या सीधी बिजाई और रोपाई दोनों में ही खाद की मात्रा बराबर डालनी चाहिये?**

**उत्तरः**

नहीं! सीधी बिजाई में रोपाई की अपेक्षा कम खाद (100–120 किग्रा नत्रजन, 50–60 किग्रा फास्फोरस एवं 50–60 किग्रा पोटाश) डालनी चाहिये। नत्रजन का एक चौथाई एवं फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई के समय कूंड़ में डालें, शेष नत्रजन का दो चौथाई भाग कल्ले निकलते समय बची हुई एक चौथाई नत्रजन की मात्रा को बाली निकलने के समय प्रयोग करना चाहिये।

**प्रश्न: यदि खाद की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध न हो तो उर्वरकों का अनुपात क्या होना चाहिये?**

**उत्तरः**

कम उर्वरक दे पाने की स्थिति में भी उर्वरकों (नत्रजन : फास्फोरस : पोटाश) का अनुपात 2:1:1 ही रखा जाये जिससे फसल को संतुलित मात्रा में खाद उपलब्ध हो सकेगी।

**प्रश्नः नर्सरी में खरपतवार बहुत हो जाते हैं इनको रोकने के लिये क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

नर्सरी की बिजाई से लगभग 15 दिन पूर्व नर्सरी वाले खेत की सिंचाई कर दें जिससे सभी खरपतवार निकल आयेंगे और उन्हें जोतकर खेत में दवा दें उसके बाद नर्सरी की बिजाई करें तो कम खरपतवार आयेंगे।

धान की नर्सरी में खरपतवार

**प्रश्नः क्या हम अपना पैदा किया हुआ बीज दुबारा बीज सकते हैं?**

**उत्तरः**

केवल संकर (हाइब्रिड) बीजों को छोड़कर सभी बीजों को दुबारा बीजा जा सकता है परंतु अगर संभव हो तो 3–4 साल के बाद पुनः प्रमाणित बीज लेकर बुवाई करें।

**प्रश्नः वर्षा आधारित धान में खाद की कितनी मात्रा एवं कब देनी चाहिये?**

**उत्तरः**

सम्पूर्ण उर्वरक (60 किग्रा नत्रजन, 40 किग्रा फास्फोरस एवं 40 किग्रा पोटाश) बुवाई/रोपाई के समय खेत में डालें।

**प्रश्नः हमारे खेत में पानी रूकता है, जल निकास की सुविधा नहीं है, वहां पर खाद कब और कितना डालें?**

**उत्तरः**

जिन स्थानों में धान के खेतों में पानी रूकता है वहां रोपाई के समय ही खाद की पूरी मात्रा देना उचित होगा। यदि किसी कारणवश यह संभव नही है तो यूरिया का 2–3 प्रतिशत घोल का छिड़काव कल्ला निकलते समय एवं बाली निकलने के समय करना लाभदायक होगा।

**प्रश्नः हमारे पास पानी की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है क्या कम पानी से भी धान की फसल ली जा सकती है?**

**उत्तरः**

अवश्य! धान की फसल को लगातार पानी भरा रखने की आवश्यकता नहीं है। कुछ विशेष अवस्थाओं जैसे कि कल्ले फूटने, बाली निकलने, फूल बनने एवं दाना भरते समय, खेत में पानी भरा रहना चाहिये।

**प्रश्नः नर्सरी को रोगों से बचाने के लिये क्या करें?**

**उत्तरः**

यदि अपना बीज प्रयोग कर रहे है तो उसे उपचारित करके ही बोयें। 25 किग्रा बीज को 75 ग्राम थीरम या 50 ग्राम कार्बेन्डाजिम को 8–10 लीटर पानी में घोलकर बीज में मिला दें और उसे छाया में सुखाकर नर्सरी बीजें।

**प्रश्न: नर्सरी में बीज की मात्रा कितनी डालनी चाहिये?**

**उत्तरः**

एक हेक्टर क्षेत्रफल की रोपाई के लिये 800 से 1000 वर्ग मी. क्षेत्रफल में महीन धान का 30 किग्रा, मध्यम धान का 35 किग्रा एवं मोटे धान का 40 किग्रा बीज प्रयोग करना चाहियें

**प्रश्न: धान की फसल में मोथा (खरपतवार) बहुत है। इसको समाप्त करने के क्या उपाय हैं?**

**उत्तरः**

धान के फसल में मोथा खरपतवार को दूर करने के लिए मेटासल्फ्यूरान + क्लोरोन्यूरान इथाईल 8.0 ग्राम + बिसपाइरी बैंक सोडियम 40 मिली. प्रति बीघा की दर से छिड़काव करने से इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

धान की फसल में मोथा

**प्रश्न: धान की फसल में पौधे की पत्तियां मुरझाई हुई सी हैं एवं सूख रही हैं तथा पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बों के साथ–साथ कुछ रेखायें भी दिखाई दे रही हैं। इसका क्या कारण हैं?**

**उत्तरः**

कुछ सूक्ष्म तत्वों की कमी के कारण ये लक्षण उत्पन्न होते हैं। इनको दूर करने के लिए सूक्ष्म तत्वों का मिश्रण 5.0 किग्रा + यूरिया 15.0 किग्रा प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान में तना भेदने वाले कीड़े लग गए हैं। इनकी रोकथाम कैसे करें?**

**उत्तरः**

तना भेदक कीट से फसल को बचाने के लिए फिप्रोनिल 4.0 किग्रा की मात्रा रेत में मिलाकर प्रति बीघा की दर से डालना चाहिए।

धान में तना भेदने वाले कीड़े

**प्रश्न: धान की पौध बढ़ नहीं रही है तथा लाल पड़ रही है, इसके लिए क्या करें?**

**उत्तरः**

इसके लिए फिप्रोनिल 3.5 किग्रा + मोनो जिंक 3.0 किग्रा प्रति बीघा की दर से छिड़काव करे।

**प्रश्न: धान की फसल में पत्तियाँ लिपट जा रही हैं। यह कोई रोग लग रहा है क्या, इससे बचाव के क्या उपाय हैं?**

**उत्तरः**

यह लक्षण धान में पत्ता लपेट कीट के कारण है। इस समस्या को दूर करने के लिए ट्रायजोफास/क्लोरोपाइरीफास/क्विनालफास दवा की 2.5 मिली मात्रा प्रतिलीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

धान की फसल में पत्तियाँ लिपटना

**प्रश्न: धान की फसल में तरह–तरह की घास एवं खरपतवार हो गई हैं। इनको समाप्त करने के लिए क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

- चौड़ी पत्तियों वाली घास है तो उसके लिए 2-4-D (सोडियम) 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

- यदि कई प्रकार की घास एवं खरपतवार हो गई हैं तो इसके लिए बिस्पाइरीबैक सोडियम (1 पैकेट) + क्लारिक्यूरान मेटासल्फ्यूरान (1 पैकेट) को 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से सभी प्रकार की घासों एवं खरपतवारों से छुटकारा मिल जाता है।

धान की फसल में तरह–तरह की घास एवं खरपतवार

**प्रश्न: धान की फसल में सफेद सुंडी लग रही है इनसे अपनी फसलों को किस प्रकार बचाएं?**

**उत्तर:**

इससे बचाव के लिए क्लोरोपाइरीफास 2.0 ली. + 5 किग्रा. जिंक (33 प्रतिशत) का छिड़काव करे या 6 किग्रा जिंक को यूरिया में मिलाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की जड़ों में सफेद कीड़े लग गए हैं इन कीड़ों से फसल की सुरक्षा कैसे करें?**

**उत्तरः**

इनकी रोकथाम के लिए काराटाफ हाइड्रोक्लोराइड 4 किग्रा प्रति बीघा अथवा 3.5 किग्रा फियोनिल प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें।

धान की जड़ों में सफेद कीड़े

**प्रश्न: धान की फसल में कितनी मात्रा में और कब–कब खाद डालना चाहिये?**

**उत्तरः**

अधिक उपज देने वाली प्रजातियों के लिये 120:60:40 किग्रा. नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश प्रति हे. की दर से डालना चाहिये। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई के समय एवं नत्रजन की काफी मात्रा को दो बार में कल्ले कुटाव के समय एवं बाली बनने से पूर्व डालना चाहिये।

**प्रश्न: धान के खेत की मिट्टी के परीक्षण से पता चला कि खेत में जिंक की कमी है। इसके लिए क्या करें?**

**उत्तरः**

जिंक की पूर्ति के लिए डायथेन Z.78 की 3 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में डालकर छिड़काव करें। खेत में रोपाई के समय 10 किग्रा जिंक सल्फेट (33 % जिंक) प्रति हे. का प्रयोग करें।

**प्रश्नः धान को झोका रोग से कैसे बचाएं?**

**उत्तरः**

झोंका रोग से बचाव के लिए प्रोपीनोकोनोजोल 2.0 मिली/लीटर पानी + स्ट्रेप्टोमाक्सिन सल्फेट 18 ग्राम + डी.डी.वी.पी. 1.0 मिली/प्रति ली पानी अथवा क्वीनालफास 2.5 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्नः फफूंद को किस प्रकार नष्ट करें?**

**उत्तरः**

इसके लिए हेक्साकोनोजोल + जिनेव का छिड़काव करें।

धान में फफूंद रोग

**प्रश्न: धान की फसल में जिंक की कमी को किस प्रकार पूरा करें?**

**उत्तरः**

इसके लिए जिनेव + हेक्साकोनोजोल (अवतार) 2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की पत्तियां पीली पड़ रही हैं एवं सड़ रही हैं?**

**उत्तरः**

इनकी रोकथाम के लिए प्रोपिनोकोनोजोल 2.5 मिली प्रति लीटर पानी के साथ में स्ट्रेप्टोमाक्सीन सल्फेट 19 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान में झुलसा रोग लग गया है। किस प्रकार बचाव करें?**

**उत्तरः**

झुलसा रोग से बचाव के लिए प्रोपिनोकोनोजोल 1.5 मिली/लीटर पानी अथवा जिनेव 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी + स्ट्रेप्टोमाक्सीन सल्फेट 6 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान में ब्लाइट रोग की रोकथाम कैसे करें?**

**उत्तरः**

हेक्साकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल 2.0 मिली दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से ब्लाइट से छुटकारा मिल जाएगा।

धान में ब्लाइट रोग

**प्रश्नः एक हे. की रोपाई के लिये कितने बीज की नसर्री लगानी चाहिये?**

**उत्तरः**

एक हे. क्षेत्रफल की रोपाई के लिये महीन धान का 30 किग्रा. मध्यम धान का 35 किग्रा. एवं मोटे धान का 40 किग्रा. बीज प्रयोग करना चाहिये।

**प्रश्नः धान की फसल में झुलसा रोग के साथ–साथ तना भेदक कीट भी लग गए है। इन दोनों से फसल का बचाव कैसे करें?**

**उत्तरः**

इसके लिए ट्राइसाइक्लाजोल + मैन्कोजैब – 2.0 ग्राम + क्लोरोपाइरीफास – 2.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्नः धान में ब्लास्ट (झुलसा) का प्रकोप है इससे फसल को कैसे बचांए?**

**उत्तरः**

इसके लिए ट्राइसाइक्लाजोल – 1.0 ग्राम प्रति ली पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान में ब्लास्ट (झुलसा)

**प्रश्नः धान की पत्तियों में पीले धब्बे पड़ रहे है। ये क्या है इनसे किस प्रकार बचाव करें?**

**उत्तरः**

ये खैरा रोग के लक्षण हैं जोकि जिंक की कमी से होने वाला रोग है। अतः इसके लिए 112 किग्रा मोनोजिंक 4.0 किग्रा. यूरिया में मिलाकर प्रति हेक्टेअर में छिड़काव करें।

धान की पत्तियों में पीले धब्बे

**प्रश्नः धान की पत्तियां नीचे से सूख रही हैं। इसकी रोकथाम के उपाय बताएं?**

**उत्तरः**

जिनेव + हेक्साकोनोजोल 2.0 ग्राम/लीटर + स्ट्रेप्टोमाक्सिन सल्फेट 12.0 ग्राम/100 लीटर पानी के दर से छिड़काव करें तथा चार दिन बाद 20 किग्रा. यूरिया + 2 किग्रा. मोनोजिंक + 1.0 किग्रा फैरस सल्फेट का छिड़काव करें।

**प्रश्नः धान की फसल में पत्तियों तथा दानों में बहुत छोटे–छोटे भूरे रंग के धब्बे से हो गए हैं। इनसे किस प्रकार फसल का बचाव करें?**

**उत्तः**

धान में यह लक्षण हेल्मेन्थेस्पोरियम के प्रकोप के कारण होता है। इससे बचाव के लिए ( जिनेव + हेक्साकोनोजोल) – 2.0 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की फसल में हेल्मेन्थेस्पोरियम

**प्रश्नः धान की फसल को गंधी बग के प्रकोप से कैसे बचायें?**

**उत्तरः**

एमिडाक्लोप्रिड–1.0 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की फसल में गंधी बग

**प्रश्नः धान की फसल में भुनगा/टिड्डों का प्रकोप है उनसे किस प्रकार छुटकारा पाएं?**

**उत्तरः**

स्पाइरोमेसीफेन 1.25 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

यतोधर्मस्ततोजयः

**प्रश्न: धान की फसल में दाने हरे रंग के मखमली स्पोरयुक्त गोले के रूप ले रहें हैं तथा बाद में इनका रंग संतरे की तरह या फिर पीला–हरा हो जाता है, ये किस रोग के लक्षण है तथा इनसे फसल को किस प्रकार बचाया जाए?**

**उत्तर:**

ये लक्षण कण्डुआ रोग के हैं, इनसे बचाव के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम + स्ट्रेप्टोमाक्सिन सल्फेट 12.0 ग्राम/100 लीटर पानी के दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। कण्डुआ रोक से ग्रसित बालियों को प्लास्टिक की थैलियों में बांधकर धान के खेतों से दूर ले जाकर मिट्टी में गाड़ दें या जलाकर नष्ट कर दें।

धान की फसल में कण्डुआ रोग

**प्रश्न: धान की जड़ों में सूडी लगी है इसके लिए क्या उपाय करें?**

**उत्तर:**

फिप्रोनिल 3.0 किग्रा/बीघा की दर से डालें।

धान की जड़ों में सूडी

**प्रश्नः धान की फसल में चूहे बहुत हो गये हैं फसल को काट रहे हैं कैसे नियंत्रण करें।**

**उत्तरः**

जहां चूहों के बिल हों उन्हें चिह्नित कर लें। जिंक सल्फाइड 80 प्रतिशत की 1.0 ग्राम मात्रा को 1 ग्राम सरसों के तेल एवं 48 ग्राम भुने हुए दाने में मिलाकर बिलों में डालें और छेद बंद कर दें। यह प्रक्रिया 2–3 बार करने से चूहों को नियंत्रित किया जा सकता है।

धान की फसल में चूहे

**प्रश्न: ऊसर खेत हेतु धान की कौन सी प्रजाति का चयन करें?**

**उत्तरः**

ऊसर भूमि के लिए धान की सीएसआर–36 नर्सरी एवं सीएसआर–43 प्रजातियां लगायें। बिजाई से पहले बीज को उपचारित कर लें। बीज उपचारित करने के लिए थीरम 3.0 ग्राम प्रति किग्रा + कार्बेन्डाजिम को पानी में घोलकर बीज को शोधित करें। ऊसर भूमि को धान के लिए तैयार करते समय डी.ए.पी. तथा जिंक सल्फेट की उचित मात्रा का प्रयोग करें।

**प्रश्न: धान की फसल में तना भेदक एवं भुनगे का प्रकोप है किस प्रकार इनसे फसल की सुरक्षा करें?**

**उत्तरः**

फिप्रोनिल 3.5 किग्रा/बीघा की दर से डालें।

**प्रश्न: धान की पौध गलन की समस्या से ग्रसित है क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

जिनेव 2.5 ग्राम + स्ट्रेप्टोमाक्सिन सल्फेट 0.2 ग्राम/लीटर पानी के दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की पौध गलन

**प्रश्न: धान में दीमक का प्रकोप है, इसके नियंत्रण हेतु क्या उपाय करें।**

**उत्तरः**

फिप्रोनिल 4.0 किग्रा/बीघा की दर से डालें या क्लोरोपाइरीफास 1.0 लीटर प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें।

धान में दीमक का प्रकोप

**प्रश्न: धान की फसल में पत्तियां पीली पड़ रही हैं तथा पौधों की वृद्धि नहीं हो रही है, इसके लिए क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

मोनोजिंक 2.0 किग्रा + फैरस सल्फेट 1.0 किग्रा + 8 किग्रा यूरिया/बीघा की दर से छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान में खरपतवार की समस्या से किस प्रकार बचाव करें?**

**उत्तरः**

प्रीतिलाक्योर 500 मिली/एकड़ की दर से छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की पौध कमजोर है। क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

फिप्रोनिल 3.0 किग्रा/बीघा तथा 2 दिन बाद यूरिया 10.0 किग्रा + जिंक (33प्रतिशत) 2.5 किग्रा + 1/2 किग्रा सल्फर प्रति बीघा का छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान में दवर/झूसा/मोथा की समस्या का निदान कैसे करें?**

**उत्तरः**

क्लोरोयुरिनइथाईल + मैट सल्फ्यूरान 8.0 ग्राम + बिसपाइरीबैक सोडियम 100 ग्राम प्रति एकड़ 120 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की पत्तियों का ऊपरी सिरा सूख रहा है। इसकी रोकथाम के लिये क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

जीनेव 3.0 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की पत्तियों का ऊपरी सिरा सूखना

**प्रश्न: धान में पोषक तत्वों की कमी की पूर्ति के लिए क्या करना चाहिए?**

**उत्तर:**

इसके लिए सूक्ष्म तत्वों का मिश्रण 5.0 किग्रा प्रति बीघा की दर से यूरिया में मिलाकर डालें।

**प्रश्न: धान में जिंक एवं लौह तत्व की कमी की पूर्ति किस प्रकार करें?**

**उत्तर:**

इसके लिए मोनोजिंक 3.0 किग्रा + फेरस सल्फेट 2.0 किग्रा को यूरिया के साथ मिलाकर डालें।

**प्रश्न: धान में फफूँदी (हेल्मेथो) एवं टिप बर्निंग के प्रकोप को कैसे दूर करें?**

**उत्तर:**

जीनेब 3.0 ग्राम + बैक्टीरियानाशक 0.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की फसल में पत्ती झुलसा (शीथ ब्लाइट) का प्रकोप है। किस प्रकार से इस समस्या से छुटकारा मिले?**

**उत्तरः**

प्रोपीकोनाजोल 1.0 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की फसल में पत्ती झुलसा

**प्रश्न: धान की फसल में लीफ ब्लास्ट तथा पत्ती लपेटक का प्रकोप है। इनसे किस प्रकार फसल को बचांए?**

**उत्तरः**

हेक्साकोनाजोल + जिनेब + ट्राइऐजोफास 2.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

यतोधर्मस्ततोजयः

धान की फसल में लीफ ब्लास्ट तथा पत्ती लपेटक

**प्रश्न: धान की फसल को झोंका रोग से कैसे बचांए?**

**उत्तरः**

हेक्साकोनाजोल 400 ग्राम + 12.0 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति बीघा की दर से छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की फसल को हेल्मेन्थो की समस्या से किस प्रकार बचाएं?**

**उत्तरः**

मेन्कोजेब + कार्बेन्डाजिम 2.0 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की खड़ी फसल गलकर गिर रही है इसकी रोकथाम के लिये क्या उपाये करें?**

**उत्तरः**

प्रोपिनोकोनाजिल 2.0 मिली/लीटर + स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 12 ग्राम/50 लीटर पानी की दर से धोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की फसल में जड़ एवं तना छेदक कीट की रोकथाम कैसे करें?**

**उत्तर:**

हेक्साकोनाजोल फिप्रोनिल 3.0 किग्रा/बीघा की दर से छिड़काव करें।

धान की फसल में जड़ एवं तना छेदक कीट

**प्रश्न: धान की पत्तियां पीली पड़ रही है। इसकी रोकथाम कैसे करें?**

**उत्तर:**

चीलेटेड जिंक 250 ग्राम/बीघा की दर से छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की फसल में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिये क्या करें?**

**उत्तर:**

बिसपाइरीबैक सोडियम 1.0 मिली/15 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की नर्सरी झुलस (जल) रही है क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

सूक्ष्म तत्वों का मिश्रण 1.0 मिली + जिन्कोब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की नर्सरी का झुलसना

**प्रश्न: धान की फसल को जड़ धुन रोगों के प्रकोप से किस प्रकार बचायें?**

**उत्तरः**

फिप्रोनिल 3.0 किग्रा/बीघा की दर से छिड़काव करें।

धान की फसल का जड़ धुन रोग

**प्रश्न: धान की फसल में पत्तियों के किनारे जल गये हैं उसके लिए क्या उपाय करें?**

**उत्तर:**

जिन्कोब 3.0 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की फसल में पत्तियों के किनारे जलना

**प्रश्न: धान की फसल को तना छेदक कीट से किस प्रकार बचाव करें?**

**उत्तर:**

फिप्रोनिल 3.0 किग्रा/बीघा छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की पत्तियों में कीड़े लगे हैं, उनसे किस प्रकार धान की सुरक्षा करें?**

**उत्तर:**

कीड़ों से धान को बचाने के लिए क्वीनोफास 2.0 मिली/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की फसल में कम वृद्धि हो रही है इसके लिए क्या उपाय करें?**

**उत्तर:**

धान की वृद्धि यदि रूकी हुई है तो उसके मोनोजिंक 2.5 किग्रा/बीघा का छिड़काव करें।

**प्रश्नः धान की पत्तियां भूरी–हरी हो रही हैं तथा कुछ पत्तियां पीले रंग की हो रही हैं जैसे फसल पकने पर हो जाती हैं तथा इसी लक्षण के साथ पौधें मर रहें हैं। इनसे किस प्रकार फसल को बचाएं?**

**उत्तरः**

यह झुलसा (बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट) रोग है, इससे बचाव के लिए प्रोपिनोकोनोजोल 1.0 मिली तथा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 12 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान की फसल में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट

**प्रश्नः धान की फसल में दाने हरे रंग के स्पोरयुक्त गोले के रूप ले रहे हैं जो कि मखमल जैसे है तथा बाद में इनका रंग संतरे की तरह या फिर पीला–हरा हो**

**जाता है। ये किस रोग के लक्षण हैं, तथा इनसे फसल को किस प्रकार बचाया जाए?**

**उत्तरः**

इसके लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्राम/लीटर तथा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन को पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्नः धान में लूज स्मट (Loose smut) से बचाव कैसे करें?**

**उत्तरः**

यह आवृत्त कण्ड रोग (Loose smut) का लक्षण है। इसके लिए प्रोपिकोनाजोल 1.0 मिली/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

धान में लूज स्मट

**प्रश्नः धान की फसल की पत्तियां लाल पड़ रही हैं, इसके रोकथाम का क्या उपाय है?**

**उत्तरः**

जिन्कोब 3.0 ग्राम/लीटर पानी तथा स्ट्रेप्टोमाइसिन का छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की पत्तियां तेजी से सूख रही हैं तथा बहुत तेजी से मर रही हैं। नये कल्ले भी नष्ट हो रहे हैं, यें किस रोग के लक्षण हैं तथा इनसे किस प्रकार फसल का बचाव करें?**

**उत्तरः**

ये पर्ण अंगभारी रोग (शीथ ब्लाइट) के लक्षण हैं, इनसे बचाव के लिए हेक्साकोनाजोल 2.0 मिली/लीटर पानी तथा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 6.0 ग्राम/50 लीटर पानी की दर से अथवा प्रोपिनोकोनाजोल 2.0 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान के पौधों को जमीन की सतह से कीड़ा काट रहा है, इसके लक्षण बतायें? किस प्रकार धान की फसल को इस कीट से सुरक्षित करें?**

**उत्तरः**

क्वीनालफास 2.5 मिली तथा डी.डी.वी.पी. 1.0 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की नर्सरी में पोषक तत्वों की कमी की पूर्ति किस प्रकार करें?**

**उत्तरः**

इसके लिए जिनेव 2.5 ग्राम + सूक्ष्म पोषक तत्वों का मिश्रण 3.0 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की पत्तियों के अंदर कीड़ा घुसा हुआ है, ऊपर से ढका है, इसका क्या इलाज है?**

**उत्तरः**

इसके लिए कैराटाप हाइड्रोक्लोराइड 4.0 किग्रा/बीघा की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। अथवा फिप्रोनिल 3.0 किग्रा/बीघा की दर से छिड़काव करें।

धान की पत्तियों के अंदर कीड़ा

**प्रश्न: धान की फसल में पत्तियों पर भूरे एवं सफेद रंग के धब्बे से हो रहे हैं इनकी रोकथाम कैसे करें?**

**उत्तरः**

इसके लिए यूरिया के साथ जिंक सल्फेट का छिड़काव करें तथा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड तथा स्ट्रप्टो का उचित मात्रा में छिड़काव करें।

**प्रश्न: धान की पत्तियों पर पीले रंग की धारियां पड़ रही हैं, पत्तियां सूख रही हैं। इसका क्या इलाज है?**

**उत्तरः**

कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्राम/लीटर पानी तथा स्ट्रेप्टोसायक्लिन का छिड़काव करें।

धान की पत्तियों पर पीले रंग की धारियां

**प्रश्न: धान की फसल में कीटों को बिना कीटनाशकों का प्रयोग करे कैसे नियंत्रित किया जा सकता है?**

**उत्तर:**

जैविक विधियों को अपनाकर जैसे खेतों में मौजूद परभक्षी कीटों जैसे मकड़ियां, वॉटर बग, मिरिडबग, ड्रैगन फ्लाई, मिडो ग्रासहॉपर एवं परजीवी जैसे ट्राइकोग्रामा का संरक्षण करके। इसके अलावा बायो पैस्टीसाइड जैसे सीएसआर–बायो, हैलो एजो, हैलो पीएसबी इत्यादि का प्रयोग करके धान की फसल को कीटों के प्रकोप से बचाया जा सकता है।

**प्रश्न: धान की फसल की कटाई किस अवस्था पर की जाये ताकि अधिक पैदावार प्राप्त हो सके?**

**उत्तर:**

जब बाली में लगभग 90 प्रतिशत दाने पीले पड़ जायें तब कटाई करें।

**प्रश्न: प्रति वर्ग मीटर में धान के कितने पौधे लगायें ताकि अधिक से अधिक पैदावार मिले?**

**उत्तर:**

प्रति वर्ग मीटर 50 हिल से कम नहीं होने चाहिये तथा प्रत्येक हिल पर 2–3 पौधे लगायें।

**प्रश्न: धान में अंतिम सिंचाई कब देना चाहिये जिससे पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े?**

**उत्तर:**

खेत में 50 प्रतिशत बालियां निकलने के 20 दिन बाद या बाली के निचले दानों में दूध बन जाने पर खेत के बाहर पानी निकाल देना चाहिये।

**प्रश्न: संकर धान की अधिक पैदावार देने वाली किस्में कौन सी हैं?**

**उत्तर:**

प्रो एग्रो 6444, पूसा आरएच10, प्रो एग्रो 6201, आरएच204

**प्रश्न: बासमती धान में खाद की मात्रा कितनी डालनी चाहिये?**

**उत्तर:**

सामान्य किस्मों की अपेक्षा बासमती धान में उर्वरक मांग कम होने के कारण 80 किग्रा. नत्रजन, 40 किग्रा. फासफोरस एवं 30 किग्रा. पोटाश पर्याप्त है।

**प्रश्न: धान की सीधी बुवाई में खरपतवारों के प्रकोप से फसल को कैसे बचाया जाये?**

**उत्तर:**

सीधी बुवाई में खरपतवारों के प्रकोप से बचने के लिये बुवाई के 48 घंटे के अंदर पेंन्डी मैथलीन की एक लीटर दवा प्रति है सक्रिय तत्व की दर से 600–800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। छिड़काव करते समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होनी चाहिये।

**प्रश्नः अगर संकर धान (हाइब्रिड) लगायें तो कितना बीज पड़ेगा?**

**उत्तरः**

संकर धान के लिये 15–20 किग्रा. बीज प्रति हेक्टर क्षेत्रफल की रोपाई के लिये प्रयोग करें।

**प्रश्नः क्या संकर धान में खाद की मात्रा सामान्य धान से ज्यादा देनी चाहिये?**

**उत्तरः**

नहीं! खाद की मात्रा लगभग उतनी ही देनी होती है। मृदा परीक्षण के आधार पर खाद डालें।

**प्रश्नः धान की पत्ती का शिरा सूख रहा है एवं किनारे कांस्य रंग के हो गये हैं, पौधे बढ़ नहीं रहे हैं क्या कारण हैं?**

**उत्तरः**

ऐसा जड़ ग्रन्थि सूत्रकृमि (रूट नाट निमैटोड) के कारण होता है इसमें पत्तियों के रंग में बदलाव होता है, जड़ों के बीच–बीच में गाठें बन जाती है। इसकी रोकथाम के लिये प्रभावित खेतों में फसल चक्र में बदलाव करें, प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव करें, गर्मियों में खेतों की गहरी जुताई करें, ट्राईकोडरमा 10 ग्राम प्रति वर्ग मी में प्रयोग करें।

**प्रश्नः जड़ ग्रंथि सूत्र कृमि के प्रति प्रतिरोधी किस्मों के नाम बतायें?**

**उत्तरः**

धान की सूत्रकृमि के प्रति प्रतिरोधी किस्में सीआर 143–2–2, सीआर 147–2–1, सीआर 1009, सीटी 428, किस्मों का चुनाव करें।

**प्रश्नः धान में पत्ती की चोटी नीचे की ओर मुरझा रही हैं और देखने में चाबुक की तरह लगती है, बाली अधूरी बन रही है इसके लिये इलाज बतायें?**

**उत्तरः**

ऐसा माइट टिप निमैटोड के कारण होता है। इसके लिये प्रमाणित बीजों का प्रयोग करें। बीजों को बोने से पहले रात भर भिगोये तत्पश्चात् 50 डिग्री सेलसियस गर्म पानी में 10 मिनट के लिये डुबोने के बाद बिजाई करें। बीज को 5–6 दिन तक 4 घंटे से अधिक फर्श पर धूप दिखाने और उसके बाद बिजाई करने से भी इस निमैटोड से बचाया जा सकता है।

**प्रश्नः धान के पौधे पीले पड़कर मुरझा रहे हैं इसका क्या कारण है?**

**उत्तरः**

ऐसा जड़ सूत्रकृमि (रूट निमैटोड) के कारण हो सकता है। इससे बचाव के लिये खेत खरपतवार मुक्त होना चाहिये, संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें, गर्मियों में गहरी जुताई करें, प्रतिरोधी प्रजातियों जैसे टीएमके–9, सी. आर.–52, एन 136, डब्लू 136 को उगायें।

**प्रश्नः धान की फसल की पत्तियां सफेद रंग में परिवर्तित हो रही हैं इसको रोकने का उपाय बतायें?**

**उत्तरः** ऐसा तना सूत्रकृमि (रूट निमैटोड) के कारण हो सकता है। इसके प्रबंधन के लिये कटाई के बाद धान की ठूठों को खेतों से हटा दें। फसल चक्र में बदलाव करें जैसे जूट, तिल एवं सरसों की फसलें लगायें। बीज का शोधन करें एवं रोपाई के 40 एवं 80 दिन बाद कीटनाशक का छिड़काव करें।

**प्रश्नः धान में पौधों की पत्तियां हल्के रंग की पीली, सकरी तथा छोटी हो गई हैं। किल्लों की संख्या भी कम हो गई है ऐसा क्यों हो रहा है? तथा इसकी रोकथाम के लिए क्या करना चाहिए?**

**उत्तरः**

यह किसी रोग के लक्षण नही हैं, बल्कि नाइट्रोजन की कमी के कारण ऐसा हो रहा है, अक्सर पौध वृद्धि के समय तथा टिलर बनने तथा बालियों के निकलने के समय नाइट्रोजन की अधिक आवश्यकता होती हैं। अतः फसल में नाइट्रोजन की उचित मात्रा का छिड़काव करने से समस्या का समाधान हो जायेगा।

**प्रश्नः धान की फसल में तने पतले, घुमावदार हो रहे हैं, पौधों की वृद्धि कम हो रही है तथा बहुत ही छोटे हैं, किल्लों की संख्या भी कम है। पौधों की पत्तियां बहुत पतली, नुकीली तथा बहुत ही गंदे हरे रंग की हो गई हैं। क्या ये किसी रोग के लक्षण हैं? इनसे बचाव के लिए क्या करें?**

**उत्तरः**

फसल में फास्फोरस की कमी के लक्षण दिख रहें हैं। फसल में फास्फोरस की उचित मात्रा का छिड़काव करने से फसल की वृद्धि भी पर्याप्त होगी तथा ये लक्षण भी समाप्त हो जायेंगें।

**प्रश्नः धान की पौध में पत्तियों के अगले सिरे पीले एवं भूरे रंग के हो गये हैं तथा कुछ में पत्तियों के आधारीय सिरे भी पीले भूरे हो गये हैं। ऊपर की पत्तियां बहुत छोटी तथा गंदे गहरे हरे रंग की हो गयी हैं।**

**उत्तरः**

ये सभी लक्षण पोटैशियम की कमी के कारण उत्पन्न होते हैं। अतः धान की फसल में पोटैशियम की उचित मात्रा का तत्काल छिड़काव करें अन्यथा अधिक कमी के कारण पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे जैसे हो जायेंगें तथा बाद में पूरी पत्तियों पर फैलकर फसल को नष्ट कर देंगें।

**प्रश्नः धान की फसल में पौधों की वृद्धि रूक गई है तथा कल्लों की संख्या भी कम है। पत्तियां सूख रही हैं तथा पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे एवं रेखाएं बन गई हैं।**

**उत्तरः**

जिंक की कमी के कारण यह सभी लक्षण धान की फसल में देखने को मिलते हैं। अतः मृदा की जांच कराकर उचित मात्रा में जिंक का छिड़काव करें इससे फसल की रूकी हुई वृद्धि पुनः आरम्भ होगी तथा उपज भी अच्छी होगी।

**प्रश्नः धान की पत्तियों के अगले हिस्से पीले पड़ गये हैं। पौधों की लम्बाई तथा कल्लों की संख्या भी घट गई है। नई पत्तियों का हरा रंग तेजी से कम हो रहा है। इसके लिये क्या उपचार करें?**

**उत्तरः**

ऐसा मृदा में सल्फर की कमी के कारण हो रहा है। सल्फर की कमी के कारण पौधे के विकास तथा फसल के पकने में ज्यादा समय लगता है। अतः मृदा का परीक्षण कराकर उचित मात्रा में सल्फर का छिड़काव करें।

**प्रश्नः धान की फसल में भूरे रंग के धब्बे हो गये हैं, जो कि तेजी से बढ़ रहे हैं तथा पौधों की पत्तियां भूमि की तरफ झुकती जा रही हैं। ऐसा क्यों हो रहा हैं?**

**उत्तरः**

सिलिकन की कमी के कारण इस प्रकार के लक्षण दिखाई देते हैं। इसकी कमी के कारण पत्तियां बहुत कोमल हो जाती हैं तथा झुक जाती हैं जिस कारण से प्रकाश संश्लेषण की क्रिया कम हो जाती है। जिसका प्रभाव फसल की उपज पर पड़ता है। अतः मृदा में सिलिकन की उचित मात्रा का सही समय पर छिड़काव करें।

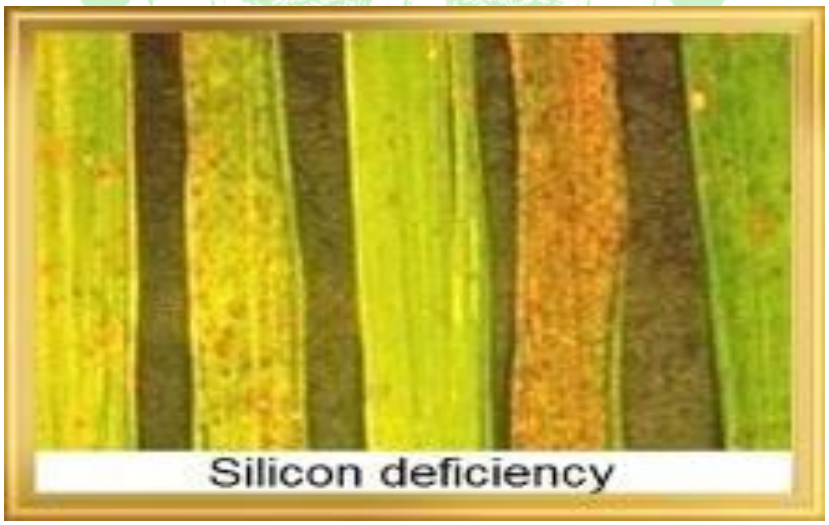

**प्रश्नः धान की पत्तियों की शिराओं के बीच में पत्तियां पीली पड़ रही हैं। क्या यह किसी तत्व की कमी के कारण हो रहा है?**

**उत्तरः**

मैग्नीशियम की कमी के कारण पत्तियों की शिराओं के बीच में पीली पड़ने लगती हैं। इसकी कमी के कारण दानों की संख्या भी कम हो जाती है तथा 1000 दानों का वजन भी कम हो जाता है। अतः यदि ऐसे लक्षण धान की फसल में दिखें तो मृदा का परीक्षण कराकर आवश्यक मात्रा में मैग्नीशियम का छिड़काव करें।

**प्रश्नः धान में पौधों की नई पत्तियों के नुकींले भाग हरे से सफेद हो रहे हैं। ऐसा क्यों हो रहा है। इसे रोकने का क्या उपाय है?**

**उत्तरः**

कैल्शियम की अत्यधिक कमी होने की स्थिति में पौधों की पत्तियां किनारों पर सफेद होने लगती हैं, मुड़ने लगती हैं और घुमावदार होने लगती हैं। अतः ऐसे लक्षण दिखने पर फसल में कैल्शियम की आवश्यक मात्रा का प्रयोग करना चाहिए।

**प्रश्नः पौधों की पत्तियों के शिराओं के बीच में पीला पड़ रहा है, पौधों की वृद्धि भी नहीं हो रही है तथा पत्तियां संकीर्ण हो गई हैं, इसके लिए क्या उपाय करें?**

**उत्तरः**

ये लक्षण लौह तत्व की कमी के कारण होते हैं। बहुत अधिक कमी होने पर सम्पूर्ण पौधा पीला पड़कर नष्ट हो जाता है। लौह तत्व की कमी के परिणाम स्वरूप तने का वजन भी कम हो जाता है जिससे पैदावार पर प्रभाव पड़ता है। अतः मृदा की जांच कराकर लौह तत्व की आवश्यक मात्रा का प्रयोग करें।

**प्रश्नः शिराओं के बीच में पत्तियां पीली पड़ रही हैं जो कि अधिकतर नई पत्तियों में हो रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है? तथा फसल को इससे कैसे सुरक्षित करें?**

**उत्तरः**

ऐसा मैगनीज की कमी के कारण हो रहा, इसकी कमी के कारण प्रायः पत्तियों के अगले सिरे पीले पड़ जाते हैं जो धीरे–धीरे पत्तियों के आधार की ओर बढ़ते जाते हैं तथा बाद में भूरे रंग के धब्बे में परिवर्तित हो जाते हैं। अतः मिट्टी की जांच कराकर आवश्यक मात्रा में मैग्नीज का प्रयोग करें।

**प्रश्नः नई पत्तियों के अगले हिस्से में हल्के रंग की धारियां सी उत्पन्न हो रही हैं तथा जो नई पत्तियां निकल रही है वो सुई की जैसी दिख रही हैं। ये किस कारण से हो रहा है इसका निदान क्या है?**

**उत्तरः**

मिट्टी में तांबे की कमी के कारण फसल में यह लक्षण दिखाई दे रहे हैं। तांबे की कमी के कारण पौधों में कल्लों की संख्या भी कम बनती है तथा परागकण भी कम विकसित होते हैं जिसके कारण पौधों में खाली दानों की संख्या बढ़ जाती है। अतः यदि ऐसे लक्षण दिखाई दें तो मृदा की जांच कराकर फसल में तांबा तत्व की पूर्ति करें।

**प्रश्नः कीटनाशकों के प्रयोग करते समय क्या सावधानियां रखनी चाहिये?**

**उत्तरः**

- कीटनाशकों को बच्चों एवं पालतू पशुओं की पहुंच से दूर रखें।
- खाली पेट कीटनाशक का प्रयोग न करें।
- छिड़काव करते समय इस बात का ध्यान रखें कि स्प्रे मशीन लीक तो नहीं कर रही है।
- कीटनाशकों का घोल तैयार करते समय पहले कीटनाशक डालें फिर पानी में घोल बनायें और उसे लकड़ी से हिलाते रहें।
- कीटनाशक की निर्धारित मात्रा को ही घोल बनायें अपनी इच्छा से गाढ़े घोल का प्रयोग न करें।
- खाली कीटनाशक डिब्बों को नष्ट कर दें।
- प्रयोग करते समय हाथों पर दस्तानों का प्रयोग करें।
- प्रयोग करते समय धूम्रपान, खाना पानी का प्रयोग न करें।
- घाव, फोड़ा, चोट से पीड़ित व्यक्ति को कीटनाशकों का छिड़काव नही करना चाहिये।
- लगातार लम्बे समय तक कीटनाशकों का छिड़काव न करें।

**प्रश्नः ड्रम सीडर से धान की बिजाई करने पर कितना बीज प्रयोग करना चाहिये?**

**उत्तरः**

ड्रम सीडर से बिजाई करने पर 50–55 किग्रा/हे0 बीज की सिफारिस की जाती है।